निहंग सबकी निगाहों में तबाहकुन कारा होते हैं।
मगर दरअस्ल उजले पोश ही बदमाश होते हैं॥

उजले पोश बदमाश

लेखक—
संगठन का बिगुल, दीप पुष्पाञ्जली
विश्व प्रेम और सेवा धर्म के
रचियता
अयोध्या प्रसाद गोयलीय 'दास'

प्रकाशक
जौहरीमल सराफ
बड़ा दरीबा देहली।

प्रथमबार २०००	बैशाख सं० १९८५	मूल्य -)

संजीवन इलेक्ट्रिक प्रिंटिंगवर्क्स देहली में मुद्रित।

वक है, उत्साह
उसे मैं जानता
के इस एकदिन
हुये मुझे प्रस-
अथवा विशेष
गोयलीय जी ने
कथा सुनी है।
के उद्देश्य से

क को इस ही
इसका उद्देश्य है

न पाठक ऐसा समझता हो। पुस्तक में वर्णित जैसी घटनायें आज दिन इस अभागी जाति की छाति पर रोज घटित होरही हैं। इस पुस्तक के पढ़ने से जाति का ध्यान इस ओर आकर्षित हो, और यह बुराई जो घुन की तरह समाज को नष्ट कर रही हैं दूर हो यही इसका उद्देश्य है।

यदि पाठकों ने पुस्तक को अपनाया तो शीघ्र ही गोयलीयजी की ही लिखी सेठ जी की कालीकरतूत नामी पुस्तक प्रकाशित करने का साहस करूंगा।

निम्नलिखित सज्जनों ने पुस्तक प्रकाशन में हमें द्रव्य की सहायता दी है एतदर्थ धन्यवाद।

२०) लाला कंवरसेन न्यादरमल सर्राफ बड़ा दरीबा
१०) ,, दौलतराम जी गर्गीय नया कटरा
१०) ,, बलदेवसिंह जैनो लाल सर्राफ बड़ा दरीबा
१०) ,, बा० नत्थनलाल जी जैन

प्रकाशक—

उजले पोश बदमाश

किस्सा इसे समझकर खुश हों न सुनने वाले।
दुःखते हुए दिलों की फरियाद से सदा है॥

सेठ मक्खनमल वल्द धर्मदासमल गुप्ता, कौम बक्काल मौजा घास की मन्डी तहसील चमारपुरा जिला कस्साबपुर के रहने वाले हैं। आपका वहां पर काफी दबदबा है, बच्चे बच्चे की जबान पर आप भुस-वाले सेठजी के नाम से मशहूर हैं, सेठजी और भुसवाले कहलाएं, है यह अचम्भे की बात! मगर सेठजी बातों के सिल-सिले में अपनी अक्ल की पत्तल फाड़ते हुए, बड़ी शान के

साथ कहा करते हैं कि चौंतीसे के अकाल में हमारे बड़ों ने पशुओं को भुस बांटा था, यही वजह है कि हम अभी तक भुसवाले सेठजी कहलाते हैं। लेकिन गांव वालों का कहना है कि सेठजी के वालिद घसीटामल उर्फ शेखचिल्ली भुस बेचा करते थे। खैर, हमें इससे क्या वास्ता? सेठजी के वालिद भुस बेचा करते हों अथवा पापड़, मगर सेठजी हैं बड़े आदमी। आप पंचायत के मुखिया और दो मन्दिरों के मुन्तज़िम हैं, कई एक सभा सोसाइटियों के आप मुर्बे चटों की बदौलत प्रेसीडेण्ट भी रह चुके हैं। सुना है एक मर्तबा किसी सुधारक दल में भी आपने अपनी टांग अड़ा दी थी, पर ईश्वर जाने उन बाबुओं ने क्यों इन्हें बछिया का बाबा समझ कर इनके गले में "शूज़हार" डाल कर सभा में से इनको धक्का दे दिया, कहते हैं जभी से आप सुधारकों के लिये उधार खाये बैठे रहते हैं आपके दोनों मन्दिरों में रोज़ाना बाक़ायदा पूजन परिज्ञाल होवे इसलिये आपने एक "घोघा बसन्त" पण्डितजी गिर्वी रख छोड़े हैं। पण्डित जी क्या हैं गोया भैरूंजी के अवतार हैं शक्ल सूरत में तो माशाअल्लाह सूर्पनखा के बेटे और बदमाशी में शैतान से कम नहीं। जब सेठजी और पण्डित जी अपनी नीलामी टमटम में बैठकर शामके वक्त हवाखोरी को निकलते हैं तो लोगों के मुंह से बे साख्ता निकल पड़ता है कि "रामने खूब मिलाई जोड़ी एक अन्धा एक कोढ़ी" सेठजी की हेकड़ी सब पर हमेशा रहती है यहां तक कि धोबी, तेली, मनिहार, चूहड़े, चमार, डोम, भांड, मीरासी, गैरे गैरे नत्थूखैरे सभी आपके रौब से थर थर काँपते रहते हैं, मारे खौफ के सेठजी के मुंह पर सभी का पेशाब निकल पड़ता है। सेठजी अपनी बात के पूरे धनी हैं, एक मर्तबा मज़ाक़ ही मज़ाक़ में एक बीवी के

होते हुए भी आप दूसरी शादी का इकरार कर बैठे थे उसी क़ौल को निभाने, अपनी जबान की पासदारी की खातिर आपको १२ वर्ष की बच्ची से निकाह करना पड़ा था। सेठजी के जबाने मुबारिक से निकले हुए बेशक़ीमती लफ्ज़ पत्थर की लकीर होते हैं, उस पर तुर्रा यह कि पण्डित जी और भी करेलों में ज़हर का काम देते रहते हैं।

सेठ जी हर मज़हबी चिट्ठे के सिरे पर एक बड़ी रक़म लिख-कर काम करने वालों का हौसला बढ़ाते रहते हैं। सेठ जी जब किसी शादी में अपनी तौंद फैलाकर चौधराहट करने बैठते हैं तब देखते ही बनता है। छोटी २ दुअन्नियों को कमीनों को बांटते हुये आप किस सफ़ाई के साथ अंगरखे की आस्तीन में छुपालेते हैं, पान की पीक को मटकेने में थूकने के बहाने जब आप उसमें [illegible] गेरते हैं; तो क़सम मरहूम पड़ोसी की उठाई गीरे और जेब कतरे भी आपके इस उस्तादाना फ़न के सामने झेप जाते हैं। सेठ जी का जैसा नाम है माशे अल्लाह जिस्म भी वैसा ही पाया है, एक मर्तवा किसी अज-नवी टिकट चेकर ने आप के लाख समझा[illegible] पर भी वजनके हिसाब से दूना टिकट चार्ज करलिया था, कद आपका [illegible] लम्बा, दांत आवड़ खूवड़, आंख ज़रा छोटी और अन्दर का [illegible] हुई गोया गोवर में कौड़ी गाढ़ दी हों, रंग आवनूसी उस [illegible] [illegible]रा यह कि चेचक मुंह दाग़, जब आप पान खालेते हैं तो लोगों को काले पहाड़ में आग लगने का शुब्हा होने लगता है, मूंछ क्या [illegible] मानो पल्टू चूहड़े ने दो झाड़ू बांध दी हैं ग़रज़ यह कि सेठ जी पर टोकरों भरकर नूर बरसता है, सुनते हैं इस नूरानी चेहरे [illegible] हासिल करने में सेठ जी को बहुत कुछ हाथ पांव पीटने पड़े थे [illegible] जिस समय परमात्मा

दुनियां की खूबसूरती तकसीम कर रहा था, सेठ जी का हाथ उस समय सबसे ऊंचा था, कुछ परमात्मा ने धोखा खाया, कुछ सेठ जी ने अपना जौहर दिखालाया लिखना फिजूल होगा। मोहल्ले भर की खूबसूरती सेठजी ही के हिस्से में आई; रंग का ख्याल न कीजिये दाई की बेवकूफी से ब्लेक-सी में गिर पड़े थे, इससे भी फायदा ही हुआ स्कूल के लड़के स्याही की जगह सेठ जी का पसीना इस्तमाल करने की ताक में लगे रहते हैं। कुछ मुंह लगे यारों के यह पूछने पर कि "सेठ जी आपकी बुलाकी भड़बूजे जैसी शक्ल क्यों है?" तब आप अपने दोनों दांत निकाल कर बड़े नाजो अन्दाजसे फर्माते हैं कि हम राजा भोजके खानदानमें से हैं।

सेठ जी ने अपने रुत्बे के लिहाज से तबीयत भी अच्छी पाई है, जो सिफात बड़े आदमियों में होनी चाहिये, वह सबकी सब हमारे सेठ जी में मौजूद हैं। आपको ले देकर तमाश बीनी का शौक अच्छा है, सब कामों से फुर्सत पाकर आप अपनी प्रेमिका राजरानी के पास पहुंचे, पहुंचने की देर थी कि किसी ने दबी ज़बान में आवाज़ कसी कि "वाह मुद्दत के फंसा है पुराना चंडूल"

राजरानी—आइये आइये मैं तो आपका इन्तजार ही कर रही थी,

जहे किस्मत जहे किस्मत कुआ प्यासे के पास आया।

सेठ जी—अरे साहब! आप क्यों मुझ नाचीज को इस क़दर शरमिन्दा कर रही हैं, खाकसार तो सरकार की कदमबोसी के लिये सर के बल तैयार है।

राजरानी—बन्दा नवाज़! मैंने तो आपके दरे दौलत पर छीतर नकीब को भेजा था (ताने से) हां साहब! अब आप

क्यों आने लगे, अब आपको ग़र्ज़ ही क्या है? इसमें आपका क़सूर ही क्या है यह तो ज़माने का दस्तूर है। कोई मरे या जीवे आपको बला से! अफ़सोस!

"वोह दिन हवा हुए जब पसीना गुलाब था"

सेठजी—क्या ख़ूब! आज तो रह रह करके दिल में नश्तर चुभो रहो हो, देखना—

तिरछी नज़रों से न देखो, आशिक़े दिलगीर को।
कैसे तीरन्दाज हो, सीधा तो करलो तीर को॥

राजरानी—मैं क्यों किसीके दिलपर नश्तर चुभोने लगी, मेरे पास तीर हैं ही कहां जो चलाऊं; आप क्यों ख्वामख्वा मुझे बना रहे हैं।

सेठ जी—जी हां बनातो रहा ही हूँ, यह नहीं कहते
"लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं"।

राज रानी—बस माफ़ फ़र्माइये, अजी देखें तो सही आपके कहां कहां छुरी, तीर, तलवार, पिस्तोल, ख़ंजर, के घाव आये हैं।

सेठ जी—(बात काटकर)

"तारीफ़ तो यही है फूलों से बू न निकले।
होजांय खून लाखों लेकिन लहू न निकले"।

राजरानी—(चिढ़कर) वाह जनाब वाह! आपतो इश्क की चौकड़ियां भरने लगे, थोड़ी देर में कुछ और कहना। अच्छा साहब आपको क्या? हमतो क़ातिल हैं दिन दहाड़े डाके डालते हैं, हम बुरे हमारा पेशा बुरा, आपतो भले हैं ना? (ठंडी सांस भरकर) हे परमात्मा! ऐसी जिन्दगी से तो अब उठाले।

सेठजी—(वेश्या का मुंह अपने हाथ से बन्द करते हुये) खबरदार ऐसी बात फिर मुंहसे निकाली तो, तुम्हें मेरी जान की कसम अच्छा लो अब इजाजत दीजियेगा, परमात्मा ने चाहा तो कल हाजिर खिदमत होऊंगा।

राज रानी—अंय, यह क्या ? आये देर नहीं हुई कि भागने की पहिले पड़गई, क्या–उलाहना ही उतारने आये थे ?

सेठ जी—मेरे दिलोजान की मलका ! उलाहना नहीं; मैं प्यास की वजह से मजबूर हूँ घर जाकर पानी पाना है।

राज रानी—अंय, तो क्या यहां पानी भी मयस्सर नहीं होगा, जो घर जारहे हैं। हां साहब इसमें आपका क्या क़सूर है यह तो जमाने का दस्तूर है ? सच है किसी कवि ने ठीक ही लिखा है कि—

यौवन था जब रूप था, ग्राहक थे सब कोय।
यौवन रत्न बिलात ही, बात न पूछे कोय॥

सेठ जी—प्यारी मुझे मजबूर न करो !

राज रानी—आख़िर मजबूरी का कुछ सबब ?

सेठ जी—यही कि तुम वैश्या हो तुम्हारे यहां का पानी पीने से धर्म नष्ट हो जायगा।

राज रानी—(खिलखिला कर) अख़्आ ! अब तो आप पूरे धर्म धीर बन बैठे सेठ जी "गुड़ खाओ और गुलगुलों से परहेज ?"

सेठ जी—तुम नहीं समझतीं यह धर्म का मामला है; वेश्या के हाथ का छुआ पानी पीना हमारे धर्म में महापाप बताया है।

राज रानी—अच्छा सेठ जी, जब आप मेरे रुखसारों को चूमते हैं तब धर्म नष्ट नहीं होता।

सेठ जी—प्यारी यहां तो तुम्हारी भूल है। मैं ऐसा बावला नहीं जो धर्म के कामों में चूक जाऊं, इसके मुत्तालिक मैंने पहिले ही पंडित जी से मशवरा लेलिया है, उनका कहना है कि औरत को संस्कृत में चन्द्र मुखी कहा गया है, चन्द्रमा से अमृत निकलता है, इसलिये स्त्रियों के कपोल पवित्र होते हैं।

राज रानी—सुभान अल्लाह, सुभान अल्लाह आपके पंडित जी क्या हैं गोया कालीदासके भतीजे मालूम पड़ते हैं। मैं सदक़े जाऊं ऐसी अक्ल के—।

सेठ जी—इसमें कोई शक नहीं पंडित जी हमारे पंडित जी ही हैं, मेरे यहां सैंकड़ों ही पंडित आये मबको ही अपना बोरिया बिस्तर छोड़कर भागना पड़ा मगर खुशकिस्मती से हमें यह पंडित जी ऐसे मिले हैं...... ।

राज रानी—(बात काट कर) जी हां 'खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो" खैर इस जिक्र को दफ़ान कीजिये मैं अपने रुखसारों पर से पानी लाती हूँ आप अ.क कीजिये कहिये यह तजवीज तो मंजूर है ना ?

सेठ जी—हां यह बात मंजूर है।

राज रानी—(पानी पिलाने के बाद) अच्छा अब आप यह तो फर्माइये कि इतने दिन आप गायब कहां रहे ?

सेठ जी—क्या बताऊं प्यारी एक पंचायत का झगड़ा आ पड़ा था, हमारी बिरादरी में एक बाबू शांति प्रसाद हैं उनको जाति से खारिज करना था।

राज रानी—कौन से बाबू शांति प्रशाद ?

सेठ जी—वही जो पहिले ब्रह्मचारी बना फिरता था !

राज रानी—(चौंक कर) अंय; तो क्या अब वो ब्रह्मचारी नहीं रहे ?

सेठ जी—हैं, मगर हम लोग सब उसे बाबू ही कहते हैं।

राज रानी—यह क्यों ?

सेठ जी—क्योंकि उसके बबुआने ख्याल है, वह कहता है कि अछूतों को कुये पर चढ़ाओ, पतित बहनों का उद्धार करो, आपस में रोटी बेटी का व्यवहार करो, यह सब बातें हमारे धर्म के खिलाफ हैं, यही वजह है कि हमें मजबूरन ऐसा करना पड़ा।

राज रानी—अगर वह ऐसा कहते हैं तो बेजा नहीं, इसमें आपका क्या नुकसान है ? आप को तो उन्हें सर आंखों पर बिठाना चाहिये, आपकी कौम के लिये जो अपना सब कुछ दान कर देवे, फकीर बनकर एक मर्तबा रूखा सूखा खाकर सर्दी गर्मी सब कुछ सहन कर आपकी भलाई के लिये दरबदर भटकता फिरे ऐसी हस्तीके तो आपको पांव चूमने चाहिये, जहां उनका पसीना गिरे वहां अपना खून बहा देना चाहिये।

सेठ जी—बेशक ! मगर सब कुछ दान करदेने से धर्मात्मा और मन्दिरों का रुपया हजम करने से कोई पापी थोड़े ही हो सकता है ?

राज रानी—उनके तो सुना है शराब, जूआ, और वेश्या गमन सबका त्याग है।

सेठ जी—तो क्या वेश्या के यहां जाना पाप है ? यह तो तफरीह है जैसे खाना खाने के बाद लोग पान खा लेते हैं, उसी

क़िस्म में से यह भी है। हमारे यहां तुम लोगों को मंगलामुखी कहा गया है, तभी तो हमारे बड़े तुम लोगों को विवाह शादियों में ले जाते थे। मगर जबसे कुछ लोगों ने शोर मचा कर यह रिवाज बन्द कराया है विवाह शादियों में शरीक होने का मज़ाही ही जाता रहा। अबतो शादियां क्या होती हैं गुड्डा गुड्डियों के खेल होते हैं, दूसरे लफ्ज़ों में यूं कहूँ कि मातम मनाया जाता है तो कुछ बुरा न होगा। यही वजह है कि आज कल दिन रात बेवाएं हो रही हैं, पण्डित जी कहते थे कि अब पुराना रिवाज फिरसे खोलना होगा। इसी बात को महसूस करके हमारी कौम के सबसे बड़े मुखिया ने लौंडों के लाख २ रोने चिल्लाने पर भी अबकी मर्तबा इलाहाबाद की मशहूर छप्पन छुरी को बुला कर यह रिवाज जारी कर दिया है।

राजरानी—सेठजी ! यह बात तो कुछ समझ में नहीं आई, बेवा तो अक्सर बुड्ढे खूसटों के शादी करने से होती हैं।

सेठजी—नहीं, यह बात नहीं है हमारी क़ौम (महासभा) तो उसी को बड़ा आदमी समझती है जो कि बीवी, बच्चों के होते हुये भी दूसरा तीसरा विवाह करे, ऐसे विवाह हमारे यहां जाइज़ समझे गये हैं।

राजरानी—तो यह बेवाएं क्योंकर होती हैं ?

सेठजी—लो यह भी सुनो, बेवाएं होती हैं ग़रीबों की शादियां होने से। पेट भर खाने को दाने नहीं, तन ढकने को कपड़ा नहीं, रहने को घर का झोंपड़ा तक नहीं और कर लेते हैं ब्याह ऐसे ही लोग भात छूछक के फिकिर ही फिकिर में मर जाते हैं और बहाना कर देते है तपेदिक की बीमारी का, कहीं किसी ने सिवाय

ग़रीबों के किन्तु बड़े आदमी के भी तपेदिक होती सुनी या देखी है ? अक्ल के अन्धे बेटी वाले यह नहीं सोचते कि अगर यह मर गया तो मेरी बेटी खायगी क्या ? बस पढ़ा लिखा खूबसूरत तन्दुरुस्त देखकर लट्टू हो जाते हैं, उन्हें गांठ की इतनी अक्ल नहीं कि लड़की क्या पढ़ाई लिखाई को लेकर चाटेगी, उसे तो धन चाहिये धन ।

राजरानी—माफ करना सेठजी, औरत धन की भूखी नहीं वह प्यार की भूखी है मसल मशहूर है "औरत रहे प्यार से नहीं जाय सगे बाप से"

सेठजी—प्यारी यह सतयुग की बातें हैं अब कलियुग है कलियुग !

राजरानी—(झल्लाकर) माफ कीजिये, मैं आप से बातों में नहीं जीत सकती, हां मैं इतना जरूर कहूँगी कि ब्र० शान्तिप्रसाद जी हैं बड़ा आदमी ! हां मैं भूली, आप यह तो फर्माइये कि उन्हें जाति से अलहदा क्यों किया गया है ?

सेठजी—कह तो दिया, वह सब की रोटी बेटी एक करना चाहता है, दूसरे लोगों को जो हमने बिरादरी से बाहर निकाल दिये हैं उन्हें हमारे कुओं पर चढ़ने को कहता है तीसरे जो बहु बेटियां हमारे यहां से कई वजूहात से निकल जाती हैं उन्हें वापिस बुलाने को कहता है, चौथे जो औरतें अपनी इज्जत लिये बैठी हैं अगर उनका कभी अन्धेरे उजाले में ऊंचा नीचा पांव हो भी जाता है तो वह अपने बड़ों की इज्जत आबरू रखने के लिये लुकवां छुपवां......गेर देती हैं, उन्हें ऐसा करने से रोकता है ।

अगर उसकी हम यह सब बातें हो जाने दें तो शाम का मज़ा ही किरकरा हो जाय।

राजरानी—वाह सेठजी वाह, यह एक ही कही अपने मज़े के वास्ते क़ौम को डुबो रहे हो, जैसे आपको शाम का मजा चाहिये उन्हें भी तो दुपेहर का मजा लेने दो। (ठंडी सांस भर कर) औरत के दुःख को औरत ही जान सकती है, वाक़ै यह मर्द बड़े वेवफ़ा होते हैं।

सेठजी—(बात काटकर) नहीं प्यारी ऐसा न कहो, हम लोगों ने इसी ख़ातिर घरों में कहार रख छोड़े हैं।

राजरानी—(हंसी को पीते हुए) अच्छा तो यूं कहिये आप लोगों के यहां घर जमाई का रिवाज़ है। जभी आप लोगों को देखकर लोग कहा करते हैं "मां टैनी बाप कुलंग जिनके बच्चे रंग बिरंग"

सेठजी—प्यारी यह धरम शासतर की बातें हैं अभी तुम समझी नहीं।

राजरानी—जी हां आप हरएक बात धरम शासतर के मुताबिक़ तो करते ही हैं, [illegible] को ब्याज़ रुपया देना भी शायद आपका मज़हब बताता है?

सेठजी—वेशक! हमारे मज़हब में दया धर्म सब से बढ़कर धर्म माना गया है किसी के [illegible] बच्चे हमारे रुपया क़र्ज़ देने से पलते हैं तो इसमें हमारा [illegible] ता ही क्या है? पुण्य का पुण्य लगे और ब्याज का ब्याज [illegible] दोनों हाथ लड्डू हैं।

राजरानी—अच्छा दस[illegible] को मन्दिरों में जाने से और कुओं

पर पानी भरने से आपको रोकने का क्या हक़ है ? जब आपके मन्दिरों में मीरासी तक जाकर सारंगी और चमड़े का तबला बजा सकते है, तब क्या वजह कि तुम्हारे धर्म को माफिक तुम्हारा भाई जो कि क़ौम की बेग़ोरी से अलहदा होगया है उससे इतनी नफ़रत की जाय ?

सेठजी—जान मन ! अब आईं आप ठीक रास्ते पर जब से इधर उधर कतराती फ़िर रहीं.........

राजरानी—(बात काटकर) हां, हां, बतलाइये बातें न बनाइये, बातों का जवाब बातों में दीजिये अगर दे सकें आप !

सेठ जी—जवाब तो मामूली है पर.........

राजरानी—(बात काटकर) पर क्यों लगाते हैं साहब ?

सेठजी—क्या खूब ? उल्टा चोर कोतवालको डांटे, उड़ी उड़ी तो आप फ़िरती हैं और मुझ से कहती हो पर क्यों लगाते हैं ?

राजरानी—अरे वाह ! आप तो बाल की खाल निकालने लगे तब यूं कहो ना हज़रत लखनवियों को झेंपाने का बीड़ा खाए हुए बैठे हो ।

सेठजी—अभी तक कहां बैठा हूं ? इजाज़त दो तो बैठूं ।

राजरानी—(झेंपकर) ज़बान को लगाम दीजिये, ज्यादे न बढ़िये, सीधी तरह से बतलाइये कि आप ग़ैरों को तो नही रोकते फिर अपने भाइयों के साथ ऐसा ज़ुल्म क्यों करते हैं ?

सेठजी—मेरी राजरानी तुम बड़ी भोली हो, ग़ैर क्या हमारे बाबा के नौकर हैं जो हमारे मना करने से मान जांयगे, यह ज़ोर तो अपने भाइयों पर ही चल सकता है ।

राजरानी—अरे वाहरे आपकी अक्ल "घर की मुर्गी दाल बराबर" आपके भाई क्या हुये, गोया जर खरीद अफरीका के हबशी गुलाम हुये जब जी चाहा गला घोंट दिया !

सेठजी—अजी तुम यह बातें जाने भी दो, क्या नामाकूल पचड़ा बीच में ले बैठी हो कि कै भी होने को आई। हमारी बला से कोई जीवे या मरे, यहां तो हर वक्त चैन की बंसी बजती है मैं तो पण्डितों के बहुत कुछ रोने धोने पर पंचायत में चला गया था।

राजरानी—और यह मैं ज़रूर कहूँगी कि इन्सान से नफ़रत करना आपके यहां महापाप लिखा है।

सेठ—यह छपे हुए शासतरों में लिखा होगा, हम लोग छपे हुए शासतर ही नहीं मानते, क्योंकि शासतर छपवाना भी हमारे मजहब के खिलाफ़ है।

(मन में) देखा ! हम लोग पहिलेही कहते थे कि शासतर न छपवाओ पर कौन सुनता है; कहते हैं साहब धरम प्रचार होगा। धरम का परचार हुआ है रंडियां तक हमारे घरके भेद जानने लगीं।

राज रानी—तो सेठ जी छपे हुए शास्त्र तो आपके बहुत से मन्दिरों में रक्खे हुये हैं।

सेठ जी—जिन मन्दिरों में छपे हुए शासतर पहुंच गये हैं हम उन मन्दिरों को मन्दिर ही नहीं मानते।

राज रानी—अरे साहब ! क्यों इतना सुफ़ेद झूठ बोलते हैं कल ही तो मैंने आपके लालाजी को मन्दिर से निकलते हुये देखा है।

सेठ जी—वह हमारा बाप नहीं कोई और गधा होगा !

राज रानी—खैर-गधा हों या सूअर यह तो आपको मुबारिक मगर थे वह आपके वालिद, मैं उन्हें अच्छी तरह पहचानती हूँ।

सेठ जी—जो इन्सान होकर छपे हुये शासतर पढ़े हम लोग उसे इन्सान ही नहीं मानते, हमारे यहां शासतर का एक सुफा भी किसी की गलती से ज़मीन पर गिर पड़े तो उसे उठाने के लिये एक सौ एक दफा कुल्ला और इक्कीस मर्तवा मट्टी से हाथ सफ़ा करने पड़ते हैं, और पढ़ने के लिये तो बड़ी पाबन्दियों की ज़रूरत है। इसलिये अगर हमारे लाला जी छपे हुये शासतर वाले मन्दिर में जाते हैं तो वह हमारे सच्चे हक़ीकी वालिद नहीं उनकी तो बुढ़ापे में आकर अक्ल ख़राब होगई है।

राज रानी—(मन में) क्या खूब ! मज़हवी जोशमें इतने भड़के कि बापको बापही नहीं मानते, गोया आप आसमान से ढे पड़े हैं (प्रकट) क्यों सेठ जी आप भी तो बहुत सी बातें मज़हब के खिलाफ़ कर गुज़रते होंगे !

सेठ जी—यह सवाल दीगर है। हम जैसे बड़े आदमियों से अव्वल तो ऐसा होना ना मुमकिन है, अगर खुदा न ख्वास्ता कोई गलती हो भी जाये तो हमारे पण्डित लोग उसे बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ जाइज़ करार दे देते हैं। जिस तरह हिन्दुस्तानी काले आदमी हरबात में अंग्रेजों की नकल करते हैं, अगर्चे आज अंग्रेज अपनी नाक कटाने लग जांय तो हिंदुस्तानी भी इसे फैशन समझ कर नाक कटाने को तैयार होजायेंगे। इसी तरह से हम जो जान बूझ कर भी बुरा काम कर बैठते हैं तो उसी बुरे काम को हमारे पण्डित लोग आम लोगों में जाइज़ कहकर चालू कर देते हैं।

राज रानी—अगर आप लोगों में ऐसे ही पण्डित हैं तो उनके मुंह पर सात सुबरात की झाड़ू और हुक्के का पानी, परमात्मा ऐसे चंडूलों का मुंह न दिखावे।

सेठ जी—प्यारी ऐसा न कहो, बड़ा पाप लगेगा, जबान धो डालो, हम लोगों के पण्डित तीन लोक के पूजने हारे हैं।

राज रानी–होते होंगे आपके लिये, हम लोग तो ऐसे पण्डितों की शक्ल पर पेशाब भी न करें।

सेठ जी—प्यारी! आज तुम इतनी तनी क्यों बैठी हो, आखिर तुम्हारा इन पंडितों ने बिगाड़ा ही क्या है, जो बिचारों को भर पेट गालियां कोस रही हो।

राज रानी—(तेज होकर) बिगाड़ा ही क्या है? बड़े भोले नन्हीं के, चले हैं मुझी से बातें बनाने, यह नहीं जानते कि कितने ही यहां आकर बरेली हवा खाने चले गये। क्या खूब? जैसे मैं जानती ही नहीं गोया दूध पीती बच्ची हूँ। यह नहीं मालूम कि मैं भी तुम्हारी कौम में से एक हूँ, सबके स्याह कार [illegible] जानती हूँ। बड़े २ उजले पोश बदमाशों को नाकों चने चबाये [illegible]। सेठ जी अगर आज दुनियां में तुम्हारे जैसे उजले पोश बदमाश और और खुशामदी पंडित न होते तो दोजख की जरूरत [illegible] पड़ती। आज तुम लोगों की बदौलत लाखों नौ जवान लड़कियां घरों में बैठी तुमको रो रही हैं, हजारों छुपे २ अपने मुंह पर कालोंस पोत रही हैं और लाखों ही मुझ जैसी बदकिस्मत भरे बाजार अस्मत फरोशी कर रही हैं। सेठ जी आप तो धनवान हैं परमात्मा ने सब कुछ आपको दिया है, आप को क्या मालूम कि हमारी बहनें किस किस मुसीबतों में पड़कर यह पेशा [illegible] करती

हैं। आप लोग तो अपने मजे को मज़ा समझते हैं। सेठ जी आप शर्वतेअंगूर, बिलायती शराब, सोडा लेंमन पीते हैं पर कभी आपने अपने ग़रीब पड़ोसियों की भी खबर ली है। हाय! वह भी दिन थे जब मैं किसी की राज रानी थी, पर अब वह दिन हवा हुए अब तो आप लोगों की बदौलत अपना काला मुंह करके जैसे वैसे पेट भरती हूँ। सेठ जी औरत की जात धन की भूखी नहीं वह कुछ और ही चाहती है, मसल मशहूर है "जोरू जोर की नहीं और की" हम लोग आप लोगों को देखकर खुश नहीं होती, यह तो इस पेट पापी की वजह से हमें ऐसा करना पड़ता है। जब हम सोना चाहती हैं तो आप लोगों की वजह से हमको जागना पड़ता है, और जब हमारा हंस इस पेशे से उकता कर रोने लगता है, तब हमें मजबूरन आपके सामने बनावटी हंसी हंसनी पड़ती है, आपके हर एक इशारे पर हमको नाचना पड़ता है। परमात्मा जाने कितनी ही मर्तबा तो जी चाहता है कि तमाशबीनों का मुंह नूंचलें, मगर फिर कुछ सोचकर लहू की सी घुंट पीकर रह जाती हैं।

सेठ जी—हैं! आज तुम यह कैसी बहकी बहकी बातें कर रही हो; क्या तुम सचमुच में इस पेशे से खुश नहीं? फिर तुम वेश्या क्यों हुई?

राज रानी की आत्मकथा

फुगां में, आह में, फर्याद में, शेवन में नाले में ।
सुनाऊं दर्देदिल ताक़त अगर हो सुनने वाले में ॥

मैं वैश्या क्यों हुई ? यह बड़ा दर्दनाक सवाल है, जी चाहता है कि सर को पत्थर से फोड़ लूं ।

मैं अपनी पाप कथा खुद अपने मुंह से कहूँ, यह कैसे हो सकता है ? पिछली घटनाऐं याद आते ही रोमांच खड़े होजाते हैं, कलेजा मुंह को आने लगता है, दिल से निकली हुई सर्द आहें आसमान पर भयंकर रूप धारण कर लेती हैं, कहीं तू पापिन भी बख़्शी जायगी यही चिन्ता दिन रात सताए रहती है। फिर सोचती हूँ इसमें मेरा क़सूर ही क्या है ? जो भी कुछ मेरी क़ौम ने मुझ पै जुल्मो सितम ढाए हैं, उनका भण्डा फोड़ करदूँ, मगर ऐसा करने से फाइदा ही क्या है ? मैं तो भ्रष्टा हो ही चुकी अब क्यों व्यर्थ में उजले पोश धर्म के ठेकेदार शरीफ बदमाशों को

बदनाम करूं ? यही सोच कर मैं अब तक दिल मसोसे हुए बैठी रही, जो भी जुल्मोसितम इन रंगे स्यारों ने किये अब तक बरदाश्त करती रही। मगर उफ़ ! अब यह भयंकर वेदना मुझ से नहीं सही जाती बिना कहे जी हलका नहीं हो सकता, मुझे इस पेशे से सख्त नफ़रत हो गई है। दिल चाहता है कि एकान्त स्थान में बैठकर थोड़ी देर रोलूं, पर नहीं सेठ जी जब आपने पूछा ही है तब बता कर ही रहूँगी। हां मैं इतना ज़रूर कहूँगी कि अगर आपके पहलू में दिल, दिल में दर्द, माथे में आंखे और आंखों में ग़ैरत का माद्दा है तो मेरी इस पाप कथा को पुस्तक रूप में छपवा कर घर घर में पहुंचवा देना। मैं इस पाप कथा के सुनाने में अपनी क्वारी बहनों का भला समझती हूँ, वह इसे पढ़ कर बुड्ढों के खंजरों से बचने की कोशिश करेंगी, अगर कोई जियरन भी पेश आयेगा तो उसकी भी डाढी मूंछ उखाड़ने को तय्यार हो जांयगी। मुझे यकीन है जो सधवा बहन मेरी इस पाप कथा को पढेंगी वह मेरे नाम पर नफ़रत से थूकेंगी, मुझे गालियां देंगी। अच्छा बहनो शौक़ से थूकना मुझे इसमें भी खुशी होगी, वह तुम्हारा पातिव्रत का थूक ही मेरा संसार से उद्धार कर देगा। मुझ पापिन ने स्त्री जाति को बदनाम कर दिया है, हा ! जिस जाति में भगवती सीता, मां अंजना, शकुन्तला, सावित्री, दुर्गा, मनोरमा, मैंना, त्रिशला, मरुदेवी, अनुसूया, कमलावति, और पद्मिनी जैसी देवियां हुई हैं वहीं आज मेरे जैसी कमबख्त औरत अपने रूप को सरे बाज़ार बेच रही है कैसा आश्चर्य है ?

मेरा जन्म पंजाब प्रांत के एक छोटे से कसबे में हुआ था, मेरा बाप ग़रीब तो ज़रूर था मगर वह मुझे जान से ज्यादे प्यार

करता था, मेरी ज़िद का पूरा करना वह अपना पहिला फ़र्ज समझता था। जैसी मैं खूबसूरत थी वैसे ही वह कपड़े और जेवर पहिना कर मेरे हुस्न को दोबाला बनाये रखता था। जब मैं कोई १२-१३ वर्ष की थी तब मुझे अच्छी तरह याद है कि बड़े २ तिलकधारी पण्डितों का दिल हाथ से निकल जाता था एक टक खड़े होकर वह निगोड़े मुझे घूरा करते थे, कितने ही मुंहफट आवाज भी कस दिया करते थे, कितने ही मुझे देखकर एक आह, खींच कर रह जाते थे और कहते थे कि—

"जवानी आयगी जब देखना कहरे खुदा होगा"

मैं ऐसी बातों का अर्थ तो उस वक्त नहीं समझती थी, मगर उनकी नीयत बुरी है यह मैं ताड़ जाती थी। मैं भी इनको जलाने के लिये अपनी हमजोलियों के साथ अठखेलियां करती हुई तरह तरह के कटाक्ष बाण छोड़ दिया करती थी, मेरा यह लड़कपन उन्हें और भी कटे में नमक का काम देता था, कितने ही मनचले मुझे देख कर कहते थे—

"आपकी जाने बला क्योंकर कटे फ़ुर्क़त की रैन"

कोई कहता—

"दीपक को भावें नहीं जल जल मरें पतंग"

कोई कहता कि—

वह हमारा हौंसला है यह हमारा है जिगर।
खुले दिल से पालते हैं हम तुम्हारे तीर को॥

इसी तरह आवाजें कस कर मेले तमाशे विवाह शादियों में लोग मुझे तंग किया करते थे। मेरी हमजोलियां भी अक्सर मज़ाक में कहा करतीं थीं कि "कामलता तुझे तेरे जैसा ही काम-

देव सरीखा दूल्हा मिलेगा, वह तुझे अपने घर की राजरानी बनायगा" मुझे अपने इस हुस्न पर नाज़ था, ग़रूर था, अभिमान था, मैं समझती थी कि मैं कुछ हूँ। पर आज उसी रूप की बदौलत मैं क्या से क्या होगई, वह दिन क्या हुए जब गुड़ियों के संग खेलना, आपस में रूठना मचलना, आह, वह एक सपना था जो कि अन्धेरी रात के सन्नाटे में देखा था! दो वर्ष बाद मेरी शादी मेरे बाप ने......के एक सेठ से करदी, उसकी उम्र कोई पैंतालीस वर्ष की होगी, शक्ल सूरत में सेठजी ठीक आपही के ही भाई थे। उनकी शक्ल देखते ही मुझे चक्कर आगया, हाय, अफसोस मेरी क़िस्मत फूट गई दिल के सब मनसूबे मिट्टी में मिल गये, मेरे बाप ने मेरी शादी करके मेरी मिट्टी ख़राब करदी, मेरे सारे अर्मानों पर पानी फिर गया मेरी हसरतों का खून होगया। मैं तब समझी मेरे बाप का प्यार इतनी मुफ़िलिसी में मतलब से खाली नहीं था। मेरा पति अपनी क़ौम का मशहूर लीडर था उसके तीन लड़कियां २०–१८–१५ वर्ष की थीं तीनों की शादी हो चुकी थी घर में एक फ़क़त बूढ़ी सास थी। शादी के तीन रोज़ बाद उन्हें क़ौमी महासभा का सभापति बनना था वह वहां गये, और हमेशा को बड़े शान से गये। कहते हैं व्याख्यान देते हुए सिर में दर्द होगया था, ज्यूं त्यूं करके आये, पर व्यर्थ, वह नहीं थे उनका सिर्फ़ कलेवर था मैं हाय करके रह गई, आपे की सुध जाती रही, पाओं तले से ज़मीन खिसकने लगी, मैं शादी के आठ दिन बाद बेवा होगई, मेरे सिर पर वज्रपात हुआ। ठीक जिस रोज़ सुहाग की चूड़ियां गा बजाकर पहिनाईं गईं थी उसी के आठवें रोज़ रो रो करके तोड़ डाली गईं, घर में कोहराम मच रहा था, सभी आये गये अपनी छातियां पीट रहे थे, पर मेरी

आंखों में आंसुओ का नामो निशान न था। औरतें आने से कहती थीं कि "यह क्यों रोवे इसका यह था ही कौन ? यह तो ऐसी लक्ष्मी आई कि ८ रोज़ में ही महौल्ले भर में चान्दना कर दिया" यह जली कटीं बातें और भी मेरे लिये कोढ़ में खाज का काम दे रहीं थीं।

"नहीं बुझती जिगर की आग दो आंसू बहाने से"

मैं रोऊं और किसके लिये रोऊं क्योंकर रोऊं ? रोने का होश आवे तभी तो रोऊं। मेरे सर पर तो बिजली गिर पड़ी थी, दिल और जिगर की आग ने मेरे खून को चूस लिया था, फिर कमबख्त आंसू कहां से निकलते ? मरने वाला तो मर गया पर जीते हुओं को मार गया, मेरी सासू उसी पुत्र बियोग में चलती हुई मैं संसार में अनाथनी, असहाया होगई। पति की तमाम दौलत मेरे हाथ लगी, मगर सब बेकार मखमली गद्दे मुझे आग का काम देते थे,

कबाबे सीख़ पर करवटें हरसू बदलती थी।

जब जल उठता था यह पहलू तो वह पहलू बदलती थी॥

चन्द्रसेनी हार मेरे गले का सांप बन बैठा—

जिसे हम हार समझे थे गला अपना सजाने को।

वह काला नाग बन बैठा हमारे काट खाने को॥

सब कुछ था, पर मैं जो चाहती थी वह न था—आह !

"किसी की कुछ नहीं चलती कि जब तक़दीर फिरती है"

दोष किस को दूं बाप को या भाग्य को ? आख़िर मुझे सब्र करना पड़ा और सब्र के सिवाय चारा भी क्या हो सकता था ? अब तक मैं पढ़ना लिखना कुछ भी नहीं जानती थी, सोचा पढ़ लूंगी तो धर्म के सहारे सब मुसीबत के दिन कट जांयगे, पर वह

विधाता को क्यों मंजूर होता, मेरा घर से निकलना ही मेरी बर्बादी का बाइस हुआ। एक दिन मैं आश्रम से घर को आ रही थी रास्ते में एक लोण्डा मुझे लिफाफा देकर चला गया, यह खत लिखा हुआ था एक पंचायत के मुखिया का, लिफाफा खोला और पढ़ा, मैंने उस पर नफ़रत से थूका और टुकड़े २ करके रास्ते में फेंक आई मगर अब पछताती हूँ कि मैंने वह लिफाफा पुलिस में क्यों नहीं भेजा ?

दूसरे दिन आश्रम की नौकरानी आई और कहा "चलो तुम्हें जीयाजी बुलाती हैं" अविश्वास का कोई कारण नहीं था तौभी मैंने पूछा, आज छुट्टी वाले रोज़ ? उसने कहा "हां तुम से उन्हें कुछ सलाह लेनी है आज वह मकान पर ही हैं" जिस मकान में मैं पहुंची वह मकान अजीब था पीछे फिर कर देखा तो नौकरानी ग़ायब, मैं चीख़ मार कर रह गई। होश में आई तब अपने को एक सुन्दर सजे हुये कमरे में मख़मली गद्दों से सुसज्जित कमानीदार पलंग पर पड़े पाया। सुन्दर कमरा मेरे लिये अनोखी बात नहीं थी मैं इससे भी बढ़कर रंग महल की राजरानी थी, पर हाय ! मेरा सर्वस्व लुट चुका था, मेरे मुंह में से एक क़िस्म की बदबूसी आ रही थी मेरा तमाम बदन दुःख रहा था कितने महीने मैं वहां पर रही ठीक नहीं कह सकती। किस २ ने मेरा धर्म भ्रष्ट किया यह भी नहीं बता सकती, हां कई तिलकधारी वहां पर जाते थे उनमें वह पण्डित जी भी थे जो कि मेरी शादी के वक्त बड़े बड़े मंत्र बोलकर जमीन आसमान एक कर रहे थे, आश्रम की सब से बड़ी पण्डितानी जीया जी के नाम से मशहूर थीं इन पर सबका अटल विश्वास था मैं भी इनकी बड़ी इज्ज़त

करती थी यह बेवा थीं मैंने सोचा इसके सत्संग से मैं अपना जीवन गुजार दूंगी, मगर वह मेरा महज़ ख्याल ही ख्याल था। अन्धेरीरात का स्वप्न था।

बहुत उम्मेद थीं जिनसे हुए वह मइर्वा क़ातिल।
हमारे क़त्ल करने के बने खुद पासवां क़ातिल॥

एक दिन जीया जी मेरे उसी कमरे में आईं, मुझे तरह तरह की तसल्ली देने लगीं मुझे हंसी खुशी रहने का उसने उपदेश भी दिया, उसकी बात मुझे ज़हर सी कड़वी लगी, मारे गुस्से के मेरी आंखे लाल होगईं आपे की सुध जाती रही मैंने उसके मुंह पर नफ़रत से थूक दिया और लात मार कर पलंग से धक्का दे दिया वह मानवी वेष में राक्षसी थी, उसकी बातों से मालूम हुआ वह कितने ही घर चौपट कर चुकी थी। जब जब मेरा धर्म भ्रष्ट किया गया मेरा मुंह बन्द करके या बदबूदार कोई चीज़ पिलाकर दर असल में वह शराब थी।

यहां आकर अब मुझे मालूम हुआ है कि वह कमरा उन्हीं धर्मात्मा चौधरी साहब का था जिसने कि लौण्डे के हाथ मेरे पास ख़त भेजा था। वहां पर मेरी तरह से ही कितनी ही अभागियां की इज्जत उतारी जाती है। बदकिस्मती से मेरे वहां गर्भ रह गया, उसको गिराने की कोशिश भी की गई मैंने सोचा ऐसे जीने से तो मरना बहतर है मगर मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं थी मैं मजबूर थी। खैर, एक दिन मौक़ा पाकर मैं निकल भागी वहां से छुटी हुई तीर की तरह अपने घर पहुँची मगर सब बेकार, मेरा कई महीने लापता रहने से वह मकान पंचायत ने अपने कब्जे में कर लिया था मैं रोई गिड़गिड़ाई पैरों पड़ी पर एक न सुनी गई

भागी हुई औरत उसमें नहीं घुस सकती यह कह कर मुझे दुतकार दिया गया। बाद में मुझे मालूम हुआ कि इस काम में भी उन दोनों शैतानों का हाथ था क्या करूं, कहां सोऊं कहां ठहरूं क्या खाऊं ? जब करोड़ों रुपयों की जायदाद और दौलत छिन गई तब मेरी जैसी पापिन को कौन सहारा देगा। चलूं जमना मैया की गोद में ही सदा के लिये चैन से सोऊंगी; पर सुख चैन, मैं लिखा के ही कहां लाई थी जो मिलता ? मैं जमना जी में कूदना ही चाहती थी कि एक बदमाश ने मेरा हाथ पकड़ लिया तुम गर्भ-वती हो आत्म हत्या करना चाहती हो चलो पुलिस में, मैं डरके मारे चुप चाप उसके साथ होली, पुलिस में न ले जाकर वह कमबख्त मुझे अपने घर लेगया उसने भी जो कुछ न करना था वह किया। उस पाजी के यहां से छुटकारा दिलाने वाले कुछ नौजवान थे मैं और वह बदमाश दोनों गिरफ्तार करके कोतवाली पहुंचाये गये मुझे उन नौजवानों ने अपनी जमानत पर छुड़ा लिया उन नौजवानों के दिल में कौम का सच्चा दर्द था, मेरी शील रक्षा हो उस पापी को उसकी करनी का फल मिले, इसके लिये उन्होंने अपना खून पसीना एक कर दिया, वह बदमाशों द्वारा पीटे गये मेरी ही कौमवालों ने उन्हें अनेक तरह से बदनाम किया ! मगर उन माई के लालों ने हिम्मत न हारी, कौम की ताने जनी की कुछ भी पर्वाह न करके अपना सब कुछ बरबाद करके पूरे दो साल मुकद्दमा लड़े। पर बाहरे खुद गर्ज गद्दारो ! तुमने वहां भी मेरा पीछा न छोड़ा अदालत में भी मेरे खिलाफ गवाही देदी। बदमाश बाल बाल बच गया, वह नौजवान अपना मुंह पीट कर रह गये।

मैं उस पापी से तो बची अब मेरा गुजारा क्योंकर होवे पास पैसा नहीं, रहने को मकान नहीं, करूं तो क्या करूं ?

और जाऊं तो कहां जाऊं ? सोचा किसी की गाड़ियां बनाकर महनत मज़दूरी करके गुजारा कर लूंगी। कौम वालों को मेरे इरादे का पता चला, बस फिर क्या था मेरे इर्द गिर्द चील की तरह मंडराने लगे "हमारी नाक कट जायगी हम कहीं के भी न रहेंगे" इसी क़िस्म की मुझे तरह तरह की धमकियां दी जाने लगीं।

बैठी हुई क़िस्मत को रो रही थी, तीन रोज़ की भूखी थी कि एक बुढ़िया आई मुझे अपनी छाती से लगाकर मेरे आंसुओं को पूंछने लगी मुझे तरह २ की ढारस बन्धाने लगी। मैं सहारा पाकर और भी फूट फूट कर रोने लगी, उस बुढ़िया ने भी मेरा साथ दिया जब हम दोनों रो चुकीं दिल ही दिल में एक दूसरे की बात सुन चुकीं, मैं उसकी भलमनसाहत पर रीझ गई तब मैंने कहा मां तेरा अहसान मैं कभी न भूलूंगी जो तू कहेगी वही मैं करने को तैयार हूं। वह मुझे इस...... शहर में लाई। मैंने पूंछा मां मुझे यहां क्यों लाई हो ? वह बोली "तुझे अपनी क़ौम वालों से बदला लेना होगा यहां रह कर उनकी छातियों पर मूंग दलना, सरे बाज़ार उनकी पगड़ी उछालना अपनी जूती की नाक से उनकी नाक काटना। मैं सुन कर झिजकी, डरी दया की भीख मांगी पर उसने एक न सुनी, मुझे सजाकर एक शीशे के सामने ले जाया गया मैं अपने बनाव को देखकर फूल उठी, मेरी आंखे मारे खुशी के नाचने लगीं मैं सचमुच उस रोज़ काम लता ही मालूम पड़ती थी, मुझे गाने और उर्दू की तालीम दी जाने लगी, मैं कुछ ही रोज़ में अपने हावभाव से बड़े २ ध्वजाधर्मी ढोंगियों के दिलों को अपनी एड़ियों से मलने लगी। कामलता की जगह मेरा नाम राजरानी रक्खा गया, मेरे उसी चाण्डल से एक लड़की

हुई वह अब वहीं रहती है उसने उसी चांडाल के लड़के को अपना ग़ुलाम बना रक्खा है ।

सेठ जी अगर मैं चाहती तो कितनी ही औरतों को उड़वा मंगाती, मगर नहीं मुझे खुद इस पेशे से नफ़रत है, मैं दिनरात जली जा रही हूँ, मेरे हाथ में उनका जीवन ख़राब करने से क्या आयगा ? वह तो बे क़सूर हैं मेरी दुश्मनी तो उन उजलेपोश बदमाशों से है जो बड़े २ तिलक लगाकर मन्दिरों, सभाओं, और पञ्चायतों में बैठकर धर्म की डींग मारते हैं किन किन तरकीबों से यह धर्म के ठेकेदार पेट गिराते हैं कहा नहीं जाता !

सेठ जी शर्म की बात है आपके दो दो औरतें होते हुवे भी आपकी नीयत ठिकाने नहीं, आप अपने कलेजे पर हाथ रखकर देखो, क्या तुम्हारी तरह उनका दिल नहीं है फिर वह कब तक सब्र किये बेठीं रहेंगी, आखिर कहारों से मिलेंगी उन्हीं कहारों की औलाद तुम्हारी तमाम दोलत की मालिक होगी, फिर उनकी शादी तुम्हारी ही क़ौम में होगी, और तुम्हारे नुत्फ़े से अगर रण्डी के लड़का होगया तो तबले बजायगा, रईसों की चिलमें भरेगा और लड़की हुई तो सरे बाज़ार पेशा कमायगी लोगों से आंखें मिलायगी, गरज यह कि तुम्हारी लड़की रण्डी कहलायगी । सेठजी औरत की ज़ात बड़ी सब्र वाली होती है वह भूल कर भी ऐसे पाप करना नहीं चाहती, औरतें ही धर्म के पीछे आग में कूद कर तथा पति के साथ ज़िन्दा जल कर मर गईं । पर कोई निगोड़ा मर्द भी ऐसा हुआ है कोई एक भी बतादे ? यह मर्द ही जबरदस्ती स्त्रियों का धर्म भ्रष्ट करते हैं मैं कितने ही नर पिशाचों को जानती हूँ जो कन्या पाठशालाओं और आश्रमों के कार्य्य करता हैं, वहां की

हेड परिडतानी से मिलकर कितनी ही कन्याओं और वेवाओं का शील नष्ट कर चुके हैं कितने ही दोस्तों की औरतों से और मोहल्ले की लड़कियों से अपना काला मुंह कर लेते हैं। जब जिस क़ौम में यह जुल्म हैं उस क़ौम में रहकर ही कोई क्या करेगा ? सेठजी सोचो और समझो जिन्दगी हमेशा नहीं रहने की, इन मुर्वे चटों के फन्दों से निकलो, घरवार छोड़ो अपनी पतित बहनों के उद्धार में अपना जीवन लगादो मैं तुम्हारा साथ दूंगी, यह पाप से कमाई हुई लाखों रुपये की दौलत मैं अपनी बहनों के लिये तुम्हें सौंपने को तैय्यार हूँ.. ......

सेठ जी—बहन माफ़ करो, अब ज्यादा न रुलाओ मुझे अपनी एक एक काली करतूत याद आरही है मैं आज से अपना तन मन धन सब कुछ अपनी बहनों के नाम अर्पण करचुका चलो गांव गांव में घूमकर अपनी पतित बहनों का उद्धार करें उनको फिरसे शीलवती बनायें।

उपसंहार

सेठ भटरूमल और राजरानी दोनों भैय्या जी और बहन जी के नाम से मशहूर हैं। गांव गांव में घूम कर इन्होंने मुदा कौम में जीवन डाल दिया है, इनके व्याख्यानों में असंख्य नरनारी सम्मिलित होते हैं। इनकी प्रत्येक बात में जादू का सा असर होता है, सभी का इन पर अटल विश्वास है, बड़े बड़े घराने की लड़कियां इनके खोले हुये "महिला पतितोद्धार विद्यालय" में शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं कितनी ही वेश्याऐं पाप बन्धन से मुक्त होकर अपना जीवन सुधार रहीं हैं। सेठजी के अचानक परिवर्तन से अनेक दुराचारियों का सुधार हुआ है। जिस समाज में विधवा विवाह की आवश्यक्ता समझी जाने लगी थी, अब वहीं ब्रह्मचर्य के उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करने को नर नारी उत्सुक हो उठे हैं। बालविवाह, वृद्धविवाह कानूनन बन्द कराये जारहे हैं कुछ स्वार्थी खुशामदी टट्टू रईसों को प्रसन्न करने के लिये सभाओं की आड़ लेकर ऐसे कानूनों का विरोध कर रहे हैं किन्तु रईस भी अब भले प्रकार सावधान होगये हैं उन्होंने इन खुशामदियों को लात मार कर निकाल दिया है वह इसमें पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

मीठी चुटकी

चन्द दिनों की बात है मैं एक पागल को छोड़ने आगरे गया था। खुशकिस्मती से कहिये या बद किस्मती से मैं राजामण्डी की धर्मशाला में ठहरा हुआ था। एक पागल को छोड़ने गया था, चार पागलों से और मुडभेड़ होगई। परमात्मा ने बढ़ती दौलत में और भी तरक्की की। पूछने पर मालूम हुआ कि ये लोग होली की छुट्टियों में गांव जा रहे हैं। इन में एक थे ज्योतिषी, दूसरे वैय्याकरण जी, तीसरे न्यायालङ्कार और चौथे थे वैद्य जी। एक तो संस्कृत ने ही इन पर अपना काफी प्रभाव डाल रक्खा था, दूसरे क़ुदरती भी बिल्कुल बेवाव दाल मीम (बूदम) थे। मैंने भी इनको चुग़द जान सिस्कारी देदी, बस फिर क्या था लगे आपस में चोंच लड़ाने। स्नान वगैरह से फारिग होकर इन्हें रसोई बनाने की सनक सवार हुई। मगर मसल मशहूर है कि मुफ़लिसी में आटा गीला। ज्योतिषी जी ने करक, मीन, मेष, मिथुन, तुला राशि परमात्मा जाने क्या क्या उंगुलियों पर गिन कर रसोई बनाने का मुहूर्त भी बताया तो दो बजेके बाद बदकिस्मती से धूपभी ऐसी चटखारेदार पड़ी रहीथी कि ज़बान सूखकर तालूसे लग गई, पेट में चूहे कबड्डीखेलने लगे, मगर लाचार थे जब ज्योतिषी जी साथमें हैं तब बग़ैर मुहूर्त के कैसे काम चल सकता है ? आख़िर राम राम करके दो भी बज गये नैयायिक जी तो बर्तन लेकर घी लेने चले गये, वैद्य जी साक भाजी, ज्योतिषी जी आटा लेने गये और वैयाकरण जी एक चिकना सा लंगोट लगा नंगे बदन चौके में कूद दाल बनाने लगे। थोड़ी देर के बाद दाल ने खदबद खदबद शुरू करदी वैया-

करण जी भीगे बन्दर की तरह इधर उधर देखने लगे। काटो बो बदन में खून नहीं जोर से चिल्ला पड़े कि यह "खदबद शब्द किम् कर्तव्यम्" मगर दाल ने इनकी घबराहट पर जरा भी रहम न खाया बल्कि और भी तेजी के साथ खदबद २ करना शुरू कर दिया। आखिर वैयाकरण जी भी कब हिम्मत हारने वाले थे। मुहम्मद-गौरी ने तो हिन्दोस्तान पर बाईस ही हमले किये थे मगर हमारे वैयाकरण जी तो "बाबूपार्टी धर्म नाशक:" इसी फिकरे को याद करने में अपनी उम्र का आधा हिस्सा बर्बाद कर चुके हैं।

चट "सिद्धान्त" निकालली। मगर अफसोस सारी किताब उलट डाली कहीं भी खदबद शब्द की व्याख्या नजर नहीं आई। वैया-करण जी पसीने पसीने हो गये अब क्या करें, सारी पढ़ाई खाक में मिली जाती है। दूसरे साथ वाले क्या कहेंगे, यह फिक्र उनका और भी गला घोट रहा था। वैयाकरण जी थे जरा दिमाग के तेज मुझे सामने बैठा देखकर समझ गये कि इस बबुआने ख्याल की दाल में परछाई पड़ी है बस फिर क्या था गधे को गुलकन्द मिला। वैयाकरण जी मारे खुशी के उछल पड़े मगर मारे बोखला-हट के बजाय नमक और राई के मुट्ठी भर राख ले तपाक से दाल में झोंक दी। खैर कुछ भी हुआ मगर दाल ने फिर वह हरकत नहीं की। इधर और ही शगूफा खिला, ज्योतिषी जी विद्वान तो काफ़ी थे, मगर शक्ल सूरत के जरा हीने थे। कद आपका छोटा दांत आवड़खूवड़ आंख छोटी और अन्दर को घुसी हुई, रङ्ग आब-नूसी उस पर भी तुर्रा यह कि चेचक मुंह दाग मानो गोबर में कौड़ी गाढ़दी हो बाप के छूछक में आये हुये मखमली अंगरखे को पहन जब आप सर पर जैपुरी ढंगकी पगड़ी बांध बाज़ार को चले तो ज्योतिषी जी को बे पिये ही दो बोतल का नशा हो आया

था मगर दुकानदारों ने न मालूम क्यों कर इन्हें डकोत समझ लिया, ज्योतिषी जी जिस दुकान पर जाकर आटा कहने भी नहीं पाते थे कि दुकानदार पहिले ही इशारे से दूसरी दुकान को बता देता था। जब आप को किसी ने भी आटा नहीं दिया तब मन ही मन सोच कर बोले कि उफ़! तेरे तो चौथे चन्द्रमा हैं तुझे आटा मिल ही कैसे सक्ता है? उधर न्यायालंकार जी जब बर्तन में घी ले चुके तो उन्हें वहां भी आदत के मुताबिक तर्क सूझ गई। कहने लगे कि "घृत बर्तन आधारम् या बर्तन घृत आधारम्" बहुत कुछ सोचने के बाद भी कुछ समझ में नहीं आया, तब आपने परिक्षा के लिये घी का बर्तन उल्टा कर दिया। घी के गिर जाने से और बाजार वालों की आवाज़ाकसी से पहिले तो न्यायालंकार जी कुछ झेंपे, आख़िर यह कहते हुये कि घृत गिर गया तो बला से पर एक वस्तु का निर्णय तो हुआ।

उधर वैद्य जी की अजीब हालत थी। तमाम मार्कीट रोंद डाला मगर कहीं भी आप के मतलब का साक न मिला वैद्य जी थे मिजाज के शक्की। हर सब्जी में कुछ न कुछ दोष निकाल देते थे। कोई सब्जी कब्जियत करती है कोई गर्मी गरज साक लेजाना ठीक नहीं कोई बीमार थोड़े ही होना है। फिर सोचा खाली हाथ जाना ठीक नहीं कुछ न कुछ ले जाना आवश्यक है। दिमाग पर ज़रा ज़ोर देते ही याद आगया नीम रक्त को स्वच्छ करता है और प्रत्येक रोग को लाभ दायक है दूसरे पैसे भी खर्च नहीं होंगे।

सभी को अपनी २ इन कारवाइयों पर नाज था, मन ही मन में सोचते जाते थे कि हमतो बदकिस्मत हैं जो ऐसे देश में पैदा हुये हैं जहां कोई हुनर की कदर करना ही नहीं जानता अगर

लन्दन में हुये होते तो आज इस दिमाग़ की बदौलत वहां के अजायब घरोंकी जीनत बढ़ाते मगर क्या करें नसीब ही खोटा है (क्योंकि चोथे चन्द्रमा पड़े हैं) सब अपने २ दिलों में ख्याली पुलाव पका रहे थे, चलो स्थान पर चलें विलम्ब होगया है रसोई तैय्यार होगई होगी।

"चले थे हरि भजन को ओटन लगे कपास"

धर्मशाला में जाते ही एक की एक करतूत सुन मारे गुस्से के लोटन कबूतर बनगये कहना कुछ चाहते थे मुंह से निकलता कुछ और था। आख़िर गुस्सा ठण्डा होने पर एक एक करके चारों मेरे पास खिसक कर आये। मैंने भी अपना मतलब गठते देख कटोरदान से थोड़ा सा देहली का हलुवा सोहन और कुछ नमकीन निकाल बगैर उनके पूछे ही खाना शुरू कर दिया एक तो नमकीन और मीठे को देखकर यूं ही जबान बे काबू हो जाती है, दूसरे भूक ने और भी लगाम छोड़दी, रह रह के जबान चटखारे लेने लगी, मैं भी मतलब ताड़ सपासप हाथ मारने लगा।

यूं दाल गलती न देख उनमें से एक बोला कहिये महाशय जी आप पण्डित पार्टी के अनुयायी हैं या बाबू पार्टी के। मैंने मिरची का समोसा खाते हुये जवाब दिया कि पण्डित जी ! महाराज "अनु गच्छतीति अनुयायी" अर्थात् जो सबके पीछे चले उसे अनुयायी कहते हैं, बन्दा तो सबके आगे चलता है, मेरे जवाब को सुनकर पण्डित जी हंसे और बोले कि उत्तर तो आपने अत्यन्त सुन्दर दिया। परन्तु ...!

इतने में ही दूसरा बात काटकर बोला कि 'परन्तु क्या ? महाशय जी का हृदय तो निर्मल है, जैसे बाह्य में हैं वैसे ही अन्त-